K. Nand B.A II (Anti)

सच्ची घटनाओं एवं तथ्यों को, विशेषकर वैसी घटनाओं एवं तथ्यों को, जिनका संबंध नैतिकता (morality) से होता है, छिपा देते हैं। फलस्वरूप, इनके द्वारा दी गई सूचनाएँ दोषपूर्ण (defective) हो जाती हैं और इनके आधार पर जो अध्ययन किया जाता है वह भी काफी निर्भर-योग्य (dependable) नहीं रह जाता है।

(ii) → बालकों का पूर्ण विवरण तैयार करने में माता-पिता या परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा दी गई सूचनाओं की सत्यता की जाँच करने का कोई तरीका वैयक्तिक विधि में प्राप्त नहीं है। फलस्वरूप जो भी सूचना प्राप्त होती है उसमें आत्मनिष्ठता (subjectivity) इतनी अधिक होती है कि उसकी जाँच संभव नहीं है। अतः इस कारण भी इस विधि की वैधता (validity) पर आँच आती है।

(iii) वैयक्तिक विधि द्वारा बालकों की समस्या का अध्ययन करने के लिए यह आवश्यक है कि मनोवैज्ञानिक काफी प्रशिक्षित (trained) हों। अक्सर देखा गया है कि प्रशिक्षित होने के बावजूद मनोवैज्ञानिक बालकों की उन समस्याओं का अध्ययन जिनका स्वरूप अधिक जटिल एवं संवेगात्मक होता है, मात्र उनके पूर्व इतिहास का विश्लेषण करके ठीक ढंग से नहीं कर पाते हैं। ऐसी अवस्था में उन्हें अन्य दूसरी विधि का सहारा लेना ही पड़ता है।

(iv) वैयक्तिक विधि की अध्ययन विधि बिल्कुल ही अन्तर्दर्शी (intuitive) तथा आत्मनिष्ठ (subjective) है। बालक के एक ही केस विवरण का विश्लेषण यदि कोई विशेषज्ञों द्वारा किया जाता

P.T.O.

जाता है, तो सभी विद्यालय एकसमान निष्कर्ष पर न पहुँचकर अलग-अलग निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। इससे पता चलता है कि इस विधि में आत्मनिष्ठ अधिक है जो मनोवैज्ञानिक के अन्तर्दर्शन (intuition) का अधिक प्रभाव पड़ता है। इस आत्मनिष्ठता का प्रभाव यह होता है कि वैज्ञानिक विधि के विश्वसनीयता (reliability) तथा निष्पक्षता समाप्त हो जाती है।

इन परिसीमाओं के बावजूद वैज्ञानिक विधि का उपयोग समस्या बालकों (problem children) के व्यवहारों के अध्ययन में काफी किया जाता है।

साक्षात्कार विधि (Interview method)

साक्षात्कार विधि का भी प्रयोग शिक्षा मनोविज्ञान में किया जाता है। इस विधि द्वारा शिक्षा मनोविज्ञानिक, शिक्षार्थियों की अभिरुचियों (interested), योग्यताओं, मनोवृत्तियों (attitudes) से संबंधी समस्याओं का अध्ययन करते हैं। साक्षात्कार विधि में प्रशिक्षित एवं कुशल शिक्षा मनोवैज्ञानिक शिक्षार्थियों या बालकों का एक-एक करके या एक छोटा समूह बनाकर एक अनामने-सामने की परिस्थिति (face to face situation) में कुछ प्रश्न पूछते हैं और फिर गए उत्तरों के विश्लेषण के आधार पर शिक्षार्थी की अभिरुचियों, मनोवृत्तियों आदि के बारे में एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचते हैं। इस साक्षात्कार का प्रयोग शिक्षा मनोवैज्ञानिक बालकों के समायोजन (adjustment) संबंधी समस्याओं का अध्ययन